

बच्चों की नैतिकता को आकार देने में माता-पिता की भूमिका और पालन-पोषण शैली

बेवी शुक्ला^{1*}, डॉ. निधि अवस्थी²

¹ शोधार्थी, पीके विश्वविद्यालय शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत

beveepandey@gmail.com

² सहायक प्राध्यापिका (गृह विज्ञान विभाग), पीके विश्वविद्यालय शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश: माता-पिता एवं परिवार प्राचीनतम, स्थायी, प्राकृतिक अनिवार्य एवं रक्त सम्बन्धों पर आधारित अत्यन्त उपयोगी संस्था है जिसके अभाव में मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। परिवार के बिना हम नितान्त परावलम्बी मानव के पालन पोषण की कल्पना भी नहीं कर सकते। शिशु मानव परिवार की छत्र-छाया में परिवार के सदस्यों के स्नेह और प्रेम से पुष्ट होता है, उसका नैसर्गिक विकास होता है, वह बालक से बलवान पल्लवित, पुष्पित होता है और हरे-भरे वृक्ष के रूप में सर्वांगीण विकास को प्राप्त होता है। वृक्ष की भांति सेवा और बलिदान का आदर्श बालक यहीं से ग्रहण करता है।

मुख्यशब्द: बच्चों की नैतिकता, माता-पिता, भूमिका, पालन-पोषण, शैली

-----X-----

परिचय

बचपन वह सर्वोपरि अवधि है जहाँ सही और गलत की सभी अवधारणाएँ विकसित होनी चाहिए। उनके अध्ययनों से पता चला है कि माता-पिता बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास तब शुरू करते हैं जब बच्चे 18 से 24 महीने के होते हैं (हैमंड और कार्पेडेल, 2014)। यह दर्शाता है कि बच्चे को कितनी कम उम्र में नैतिक मूल्यों के साथ विकसित किया जाना चाहिए।

पियाजे के नैतिक विकास के सिद्धांत में नैतिकता के दो प्रकार हैं, जो विषम नैतिकता और स्वायत्त नैतिकता हैं। विषम नैतिकता में, बच्चे पूर्वस्कूली वर्षों में प्रवेश करने पर देखे जाने वाले परिणामों के आधार पर व्यवहार को अच्छा या बुरा मानेंगे (जैम्बोन और स्मेटाना, 2015)। उनका मानना है कि माता-पिता या शिक्षकों जैसे अधिकारियों द्वारा लगाए गए नियम अपरिवर्तनीय हैं। यह वह चरण है जहाँ उनकी नैतिकता विकसित और आकार लेना शुरू होती है।

चूँकि बच्चे की नैतिकता कम उम्र में ही विकसित होने लगती है, इसलिए माता-पिता ही वे लोग हैं जिन्हें अपने बच्चों की नैतिकता को आकार देने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए क्योंकि वे बच्चों के सबसे करीब होते हैं। हालाँकि, वैश्वीकरण के वर्तमान युग में आधुनिक परिवार कुछ परिवर्तनों से गुज़र रहे हैं (लैंगियर, 2016)। माता-पिता अपने बच्चों के साथ कम समय बिताते हैं क्योंकि वे अपने करियर को

आगे बढ़ाने में व्यस्त हैं। परिणामस्वरूप, हमारे किशोरों में नैतिकता कम हो रही है (डालमासिटो, 2013)।

साहित्य की समीक्षा

ट्रान, थाच और होल्टन, सारा और गुयेन, हौ और फिशर, जेन। (2019)। छोटे बच्चों में खराब शारीरिक विकास स्कूल के लिए तत्परता, व्यवहार, सामाजिक विकास और शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। इस शोध में यह पता लगाने की कोशिश की गई कि क्या शारीरिक हस्तक्षेप कार्यक्रम (सीखने के लिए आंदोलन) बच्चों के शारीरिक विकास को बेहतर बना सकता है। बच्चों के लिए आंदोलन आकलन बैटरी (दूसरा संस्करण, MABC-2) का उपयोग रिसर्चन वर्ष (4-5 वर्ष) की शुरुआत और अंत में यूके के तीन स्कूलों के 108 बच्चों (4-5 वर्ष की आयु) का आकलन करने के लिए किया गया था। 37 शिक्षकों द्वारा एक निगरानी और मूल्यांकन सर्वेक्षण पूरा किया गया, जिसमें उन तरीकों पर प्रकाश डाला गया जिनसे कार्यक्रम ने बच्चों को प्रभावित किया था। परिवर्तन स्कोर का उपयोग करके यूनीवेरिएट एनोवा ने हस्तक्षेप समूह के पक्ष में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाए जिन्होंने आंदोलन कार्यक्रम शुरू किया था।

प्रीडी, पैट और डनकॉम्ब, रेबेका और गोरेली, ट्रिश। (2020)। यह शोधपत्र पिछले कई दशकों में युवा लोगों के शारीरिक स्वास्थ्य परिणामों में रुझानों का अवलोकन प्रदान करता है। यह व्यक्ति और समाज के लिए शारीरिक स्वास्थ्य और कल्याण के महत्व के लिए तर्क देता है, जिसमें शिक्षा परिणामों में इसकी भूमिका भी शामिल है। इसके बाद शोधपत्र हस्तक्षेपों की जांच करता है, युवा लोगों के बीच शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए प्रभावी हस्तक्षेप डिजाइन के सामान्य कारकों की पहचान करता है। यह हमारे ज्ञान में शेष अंतराल और शिक्षा, समुदायों और परिवारों पर शोध के इस निकाय के निहितार्थों की चर्चा के साथ समाप्त होता है।

आचार्य, बिसना और सिगडेल, सूर्या। (2024)। महामारी के परिणामस्वरूप, परिवारों और बच्चों को शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। हालाँकि, COVID-19 महामारी और बाल विकास के बीच संबंधों पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। इस व्यवस्थित समीक्षा का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर बाल विकास पर महामारी के प्रभाव की पहचान करना है। विधियाँ: यह अध्ययन 2020-2023 के बीच किए गए 16 मात्रात्मक और गुणात्मक अध्ययनों की व्यवस्थित समीक्षा के लिए PRISMA दिशानिर्देशों का पालन करता है। परिणाम: यह व्यवस्थित समीक्षा बताती है कि COVID-19 महामारी ने बचपन में बाल विकास में बाधा डालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निष्कर्ष:

इसलिए, इन बाधाओं को दूर करने के लिए नीतियों और रणनीतियों के उपयोग को बढ़ावा देना और लागू करना महत्वपूर्ण है।

जोन्स, मौड और वॉकर, जॉय और जोन्स, एलिजाबेथ (2023)। मानव विकास में खेल के महत्व पर बहस करने वाले कई विषयों में शोध का एक बड़ा हिस्सा है, और कुछ मामलों में, ऐसे दिलचस्प संभावित तंत्रों का प्रस्ताव है जो बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक सीखने में खेल की भूमिका को समझा सकते हैं। इस श्वेत पत्र में, हम विशिष्ट प्रकार के खेल के संबंध में इस साक्ष्य की समीक्षा करते हैं, और आगे चलकर खेल अनुसंधान के लिए एक एजेंडा तैयार करना शुरू करते हैं।

व्हाइटब्रेड, डेविड और नेले, डेव और जेन्सेन, हैन और लियू, क्लेयर और सोलिस, लिनेथ और हॉपकिंस, एमिली और हिर्श-पासेक, कैथी और ज़ोश, जेनिफर। (2017)। शिक्षा के एक अनूठे रूप के रूप में, नृत्य शिक्षा का बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। नृत्य गतिविधियों के माध्यम से, कला के आकर्षण का आनंद लेते हुए, बच्चे शरीर की भाषा और सामूहिक बातचीत के माध्यम से सामाजिक नियमों और भावनात्मक अभिव्यक्ति को सीख सकते हैं, इस प्रकार सामाजिक संचार क्षमता और भावनात्मक विनियमन क्षमता को बढ़ा सकते हैं। नृत्य शिक्षा न केवल बच्चों के शारीरिक समन्वय और रचनात्मकता में सुधार करती है, बल्कि गैर-मौखिक भावनात्मक संचार के माध्यम से सहानुभूति की खेती और आत्म-ज्ञान के विकास को भी बढ़ावा देती है। यह अध्ययन बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास में नृत्य शिक्षा के तंत्र पर गहराई से चर्चा करता है, और पूर्वस्कूली शिक्षा अभ्यास के लिए एक मूल्यवान संदर्भ प्रदान करता है।

बच्चों की नैतिकता को आकार देने में माता-पिता की भूमिका

ऐसे कई शोध हैं जो दर्शाते हैं कि माता-पिता की भूमिका और पालन-पोषण की शैली बच्चों की नैतिकता को आकार देने में महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, यह शोधपत्र इस बात की जांच करने जा रहा है कि पालन-पोषण बच्चों की नैतिकता को कैसे प्रभावित करता है। ऐसा करके, यह माता-पिता के बीच अपने बच्चों की नैतिकता को आकार देने के बारे में जागरूकता बढ़ाने की उम्मीद करता है।

21वीं सदी के दौर में नैतिकता का पतन इस खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है। जैसा कि हम देख सकते हैं, आजकल की युवा पीढ़ी बड़ों का सम्मान नहीं करती है। इसके अलावा, वे सभी तरह की नैतिक समस्याओं जैसे बदमाशी, सामाजिक समस्याओं, बर्बरता आदि में शामिल होते हैं। इसके अलावा, नूर अमीरा अब्दुल्ला की हत्या के आरोप में 15 और 19 साल के दो किशोर थे, जिन पर

धारदार चाकू से 45 बार वार किया गया था (सिल्वा, 2017)। इसके अलावा, हम अखबार में युवा माँ द्वारा अनचाहे बच्चों की हत्या की खबर देख सकते हैं। आज की दुनिया में ये मामले देखने या सुनने में आम हैं।

मलेशिया के युवा और खेल मंत्रालय के अनुसार, किए गए अध्ययन से पता चलता है कि 5,860 युवाओं में से 71% धूम्रपान करते हैं, 40% अश्लील वीडियो देखते हैं, 28% जुआ खेलते हैं, 25% शराब पीते हैं और 14% ड्रग्स लेते हैं (धम्मनंद, 2001)। आजकल की युवा पीढ़ी हमारे कल के नेता हैं। अगर युवाओं में नैतिकता का विकास नहीं हुआ, तो हम दुनिया पर राज करने वाले अपने भावी नेताओं को खो देंगे।

जब भी कोई मुद्दा उठता है, हम दोषारोपण का खेल खेलना शुरू कर देते हैं। कुछ लोग माता-पिता पर आरोप लगाते हैं, जबकि कुछ मीडिया को बच्चों में नैतिकता विकसित न करने के लिए दोषी ठहराते हैं। इस अध्ययन में, हम माता-पिता पर ध्यान केंद्रित करेंगे क्योंकि माना जाता है कि वे बच्चों के सबसे करीबी व्यक्ति हैं। सुश्री एलिस म्वेसिंग्वा के अनुसार, अधिकांश माता-पिता हमेशा अपने बच्चों के लिए मौजूद नहीं होते हैं। नतीजतन, बच्चे अपने साथियों से सलाह लेंगे और गलत तत्व प्राप्त करेंगे (मुकोम्बोजी, 2014)। इसलिए, हम उन भूमिकाओं और पालन-पोषण शैलियों को देखेंगे जिन्हें बच्चों में नैतिकता विकसित करने में माता-पिता द्वारा अपनाया जाना चाहिए। एक बार माता-पिता के बीच जागरूकता बढ़ जाने के बाद, वे बच्चों की नैतिकता को आकार देने में अपनी ज़िम्मेदारी निभा सकते हैं। तब, हमारे पास ईमानदार, वास्तविक भावी पीढ़ियाँ हो सकती हैं जो हमारे देश के लिए उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकती हैं।

➤ **माता-पिता की भूमिकाएँ**

• **भागीदारी**

वर्ष 2009 में किए गए शोध से पता चलता है कि बच्चों की नैतिकता को आकार देने में जिम्मेदारी की बात की जाती है। हम जानते हैं कि बच्चों की नैतिकता किसी संस्था की एकमात्र जिम्मेदारी नहीं हो सकती। इसके बजाय, स्कूल और धार्मिक संस्थाओं को बच्चों की नैतिकता को आकार देने के लिए माता-पिता के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इसके अलावा, अपराध को रोकने में मातृ समर्थन की तुलना में पैतृक समर्थन अधिक महत्वपूर्ण है। यह सबसे अच्छी तरह से बताता है कि आजकल समाज में एकल माता-पिता के परिवारों में पले-बढ़े बच्चे उन बच्चों की तुलना में अधिक समस्याग्रस्त पाए जाते हैं जो अखंड परिवार में पले-बढ़े हैं।

इसके अलावा, माता-पिता का मानना था कि "आहार", "प्रतिबद्धता", "सकारात्मक धारणा" और "धार्मिकता" बच्चों के नैतिक विकास और शैक्षणिक उपलब्धि में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। शोध से, हम जानते हैं कि माता-पिता को बच्चों के आहार को तैयार करने में भूमिका निभानी चाहिए ताकि वे स्वस्थ रूप से खा सकें और बढ़ सकें। इसके अलावा, माता-पिता को अपने बच्चों की शिक्षा में खुद को शामिल करना चाहिए और अपने बच्चों पर विश्वास रखना चाहिए। अंत में, माता-पिता को अपने बच्चों को प्रतिदिन पाँच बार प्रार्थना करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए क्योंकि उनका मानना है कि धार्मिकता उच्च नैतिकता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जैसे-जैसे समाज विकसित होता गया, माता-पिता की भूमिका धीरे-धीरे नजरअंदाज होती गई। मलेशिया शिक्षा प्रणाली में भी, नैतिकता को आकार देने का ध्यान पूरी तरह से शैक्षणिक संस्थान पर निर्भर करता है। यह पिछले वर्षों में किए गए शोध के विपरीत है, जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक संस्थान को बच्चों की नैतिकता के विकास में भूमिका निभानी चाहिए। आजकल, कुछ माता-पिता प्रतिष्ठा, जीवन की संतुष्टि और महत्वपूर्ण निवेश (लैंगियर, 2016; दीन, अयूब, और तारमिज़ी, 2016) के बारे में अपने विश्वास के कारण बच्चे पैदा करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक उपकरण के रूप में मानते हैं। इसलिए, वे अपने कर्तव्यों को अन्य पक्षों, जैसे स्कूल के अधिकारी या ट्यूशन सेंटर के शिक्षकों को सौंपना शुरू कर देते हैं। हालांकि, दोनों पक्ष केवल ज्ञान देने में सक्षम हैं, लेकिन नैतिकता को आकार नहीं दे सकते। माता-पिता और बच्चों के बीच का बंधन समय बच्चों की नैतिकता को आकार देने में एक महत्वपूर्ण कारक है। इसलिए, माता-पिता को अपने बच्चों के नैतिक विकास के लिए उनके साथ अधिक समय बिताना चाहिए।

• रोल मॉडल्स

बच्चों की नैतिकता को आकार देने में "प्रतिबद्धता", "सकारात्मक धारणा" और "धार्मिकता" कारकों के अलावा, माता-पिता का मानना था कि "आनुवंशिकी" का भी बच्चों की नैतिकता और शैक्षणिक उपलब्धि के विकास पर प्रभाव पड़ता है। यहां चर्चा की गई आनुवंशिकी जैविक शब्द को संदर्भित नहीं कर रही है, बल्कि मॉडलिंग और अनुकरण के माध्यम से है। कुछ माता-पिता ने दावा किया कि उनके भाई-बहन अपनी शैक्षणिक उपलब्धि में उत्कृष्ट हैं और विश्वविद्यालय से स्नातक हैं। इसलिए, वे घर पर उच्च नैतिकता दिखाते हैं। बच्चे शैक्षणिक सफलता का महत्व सीखेंगे। साथ ही, वे उनके अच्छे व्यवहार की नकल भी करेंगे। अध्ययन में बताया गया है कि कुछ प्रतिभागी जिन्होंने परिवार के सदस्यों द्वारा किए गए दयालु और निस्वार्थ व्यवहार को देखा है, वे भी दयालु कृत्यों की नकल करेंगे (मैटिस एट

अल., 2009)। इसलिए, माता-पिता या चाचाओं के लिए अच्छा व्यवहार करना और बच्चों के लिए रोल मॉडल बनना महत्वपूर्ण है।

माता-पिता के बीच सही रोल मॉडल की कमी ने युवा पीढ़ी में नैतिक पतन को जन्म दिया है (लैंगियर, 2016)। माता-पिता पहले रोल मॉडल होते हैं, जिनका बच्चे अनुकरण कर सकते हैं। बच्चों का व्यक्तिगत नैतिक विकास परिवार में नियमों और नैतिक सिद्धांतों के आधार पर घर पर शुरू होगा। बच्चे परिवार की गतिविधियों का अवलोकन करेंगे और अपने परिवार के व्यवहार के कुछ पैटर्न का पालन करेंगे। बच्चे बैङ्गुरा के अवलोकनात्मक शिक्षण सिद्धांत (मैकलियोड, 2016) के आधार पर कुछ व्यवहारों का अवलोकन और अनुकरण करते थे। इसलिए, माता-पिता के लिए अच्छा व्यवहार दिखाना और अपने बच्चों के लिए रोल मॉडल बनना महत्वपूर्ण है।

• धार्मिकता

माता-पिता अपने बच्चों के नैतिक विकास को कुछ तरीकों से प्रभावित कर सकते हैं। उनमें से एक तरीका है बच्चों में धार्मिक विश्वास पैदा करना। अध्ययनों से यह साबित होता है कि माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को दिए गए नैतिक मूल्य उनके बच्चों की नैतिकता को विकसित करने में मदद कर सकते हैं (मेलाती, एट अल., 2010)। हालाँकि, शहरी परिवार अपने बच्चों को धर्म और नैतिक शिक्षा देने में विफल रहे। अध्ययन में कुछ कारकों की पहचान की गई है (सोनिया, एट अल., 2015)। सबसे पहले, पाकिस्तान में शहरी परिवारों के माता-पिता को डर हो सकता है कि उनके बच्चे धार्मिक कट्टरपंथी बन सकते हैं। इसके अलावा, शहरी बच्चे अपने माता-पिता के निर्देशों का पालन करने में अधिक जिद्दी होते हैं क्योंकि वे स्वतंत्रता चाहते हैं। इसके अलावा, माता-पिता स्वयं धर्म में कम रुचि रखते हैं और सभी धार्मिक अनुष्ठानों को अनदेखा करते हैं। यह भौतिकवाद और आधुनिक जीवन शैली को प्राथमिकता देने के कारण है।

सामाजिक अधिगम सिद्धांत दर्शाता है कि बच्चों के नैतिक निर्णय प्रतिक्रियाओं को आकार देने में मॉडलिंग प्रभावी है (सूर्या और सुनील, 2018)। इसलिए, बच्चों में उच्च नैतिकता को आकार देने के लिए, माता-पिता के पास मजबूत धार्मिक विश्वास होना चाहिए। फिर, वे अपने बच्चों में धार्मिक विश्वास पैदा कर सकते हैं। इसके अलावा, उन्हें धार्मिक अनुष्ठान करने चाहिए। यदि माता-पिता मुस्लिम हैं, तो उन्हें दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करनी चाहिए। बच्चे सामाजिक अधिगम सिद्धांत के आधार पर अपने माता-पिता के व्यवहार का अवलोकन और अनुकरण करेंगे। धार्मिकता को उच्च नैतिकता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक कहा जाता है (मेलाती, एट अल., 2010)। मलेशिया के राष्ट्रीय सिद्धांतों में,

‘ईश्वर में विश्वास’ पहला सिद्धांत प्रतीत होता है। यह दर्शाता है कि हमारे जीवन में धार्मिक विश्वासों को कितना महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। इसलिए, माता-पिता को अपने बच्चों में धार्मिक विश्वास पैदा करने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। साथ ही, उनके पास मजबूत धार्मिक विश्वास भी होना चाहिए।

• संचार

माता-पिता के नैतिक प्रतिनिधित्व अक्सर समाजीकरण तकनीकों के माध्यम से बच्चों तक पहुँचाए जाते हैं। माता-पिता और बच्चों के बीच बातचीत बच्चे के नैतिक विकास में प्रभावी रूप से योगदान दे सकती है (वेनरी और रेकिया, 2014)। इसलिए, माता-पिता के रूप में, वे अपने करियर को आगे बढ़ाने में व्यस्त नहीं हो सकते। इसके बजाय, उन्हें अपने बच्चों के साथ संवाद करने के लिए अधिक समय देना चाहिए। बातचीत के दौरान, माता-पिता अपने बच्चों को कुछ नैतिक संदेश दे सकते हैं। वे दूसरों पर बच्चे के कार्य के प्रभाव की व्याख्या कर सकते हैं और सुधारात्मक व्यवहार को प्रेरित कर सकते हैं (वेनरीब और रेकिया, 2014)। इसके अलावा, वे बच्चे के व्यवहार के प्रति अपनी निराशा व्यक्त कर सकते हैं। एक विचारशील बच्चा माता-पिता की भावनाओं को समझेगा और गलत व्यवहार को नहीं दोहराएगा। इसके अलावा, माता-पिता अपने बच्चों की समस्या सुन सकते हैं और उनकी नैतिक दुविधाओं को हल करने में उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं। नैतिक मुद्दों पर माता-पिता-बच्चों के बीच चर्चा माता-पिता के विश्वासों को बच्चे की विश्वास प्रणाली में स्थापित करने में उपयोगी है और बच्चे के समाज-समर्थक व्यवहार को आकार देने में सकारात्मक प्रभाव डालती है (जॉनसन, 2016)।

इसके अलावा, माता-पिता और बच्चों के बीच यादों को ताज़ा करने वाली बातचीत बच्चों के मूल्यों को आत्मसात करने में मदद कर सकती है। यादों को ताज़ा करने वाली बातचीत का मतलब है अतीत में किए गए किसी अपराध के बारे में बातचीत। बातचीत के दौरान, माता-पिता बच्चों को कुछ नैतिक संदेश दे सकते हैं। भावनात्मक उत्तेजना में कमी होने पर बच्चों के नैतिक संदेशों को स्वीकार करने की संभावना अधिक होती है। माता-पिता के साथ बातचीत से बच्चे चिंताओं और गर्मजोशी को महसूस कर सकते हैं। यह अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों को उनके नैतिक विकास के लिए सही रास्ते पर ले जाता है। इसलिए, माता-पिता के लिए अपने बच्चों के साथ सामाजिक रूप से समय बिताना महत्वपूर्ण है।

• बच्चों को उनके दादा-दादी के साथ समय बिताने का अवसर प्रदान करें

अधिकांश आधुनिक माता-पिता अपने काम में व्यस्त रहते हैं और उनके पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं होता। हालाँकि, वे सोचते हैं कि पुरानी पीढ़ी पुराने ज़माने की है और वे बच्चों को आधुनिक

तरीके से पालने में सक्षम नहीं हैं। इसलिए, आजकल माता-पिता अपने बच्चों को ऐसे युवाओं के पास भेजना पसंद करते हैं जो बेबीसिटर के रूप में काम करते हैं (लैंगियर, 2016)।

दरअसल, यह माता-पिता के बीच की गलतफहमियों में से एक है। शोधकर्ताओं ने सहमति व्यक्त की कि दादा-दादी बच्चों की मजबूत नैतिकता विकसित करने के लिए एक संस्था के रूप में काम कर सकते हैं। वे बच्चों को पुरानी कहानियाँ सुनाकर उन पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं (सोनिया, सर्ईदा और सादिया, 2015)। चीनी परिवार में, बुजुर्गों को एक खजाने की तरह माना जाता है। वे जीवन में अनुभवी शिक्षक हैं और जानते हैं कि उनकी अपनी शिक्षाप्रद गलतियाँ क्या हैं। इसलिए, वे अपने पोते-पोतियों को दूसरों की ज़रूरतों, सम्मान या सहनशीलता को बेहतर तरीके से समझने के तरीके सिखाने में सक्षम हैं। इसके अलावा, दादा-दादी की शिक्षा के माध्यम से पोते-पोतियों के नैतिक दृष्टिकोण को आकार दिया जा सकता है। इसलिए, माता-पिता को अपने बच्चों को अपने दादा-दादी के साथ बातचीत करने के लिए समय आवंटित करने में भूमिका निभानी चाहिए। मुझे यकीन है कि दादा-दादी भी खुश महसूस करेंगे।

➤ पालन-पोषण की शैलियाँ

• सत्तावादी पालन-पोषण शैली

अधिनायकवादी शैली में माता-पिता मांग करने की प्रवृत्ति दिखाते हैं और बच्चे की ज़रूरतों के प्रति कम संवेदनशील होते हैं। वे बच्चों पर अपनी शक्ति का प्रयोग करना पसंद करते हैं और बिना किसी कारण के उन्हें जो भी बताया जाता है उसे करने के लिए कहते हैं। वे शायद ही कभी अपने बच्चों को नैतिक चर्चा के लिए आमंत्रित करते हैं। इस तरह के माता-पिता अपने बच्चों के प्रति कुछ हद तक गर्मजोशी दिखा सकते हैं लेकिन अपने बच्चों से सम्मान की मांग करते हैं।

जो बच्चे अधिनायकवादी पालन-पोषण शैली के तहत बड़े होते हैं, उनमें असामाजिक व्यवहार का स्तर अधिक हो सकता है। माता-पिता की शत्रुता और अस्वीकृति के कारण वे अधिक असंतुष्ट और अलग-थलग हो जाते हैं। इसलिए, उनमें से कुछ बड़े होने पर अपराध कर सकते हैं। हालाँकि, कुछ शोधों में पाया गया है कि इस तरह की पालन-पोषण शैली अश्वेतों के लिए अच्छी है क्योंकि उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति कम है और पड़ोसी खतरनाक हैं।

• आधिकारिक पालन-पोषण शैली

बच्चों की नैतिकता विकसित करने में आधिकारिक पेरेंटिंग शैली सबसे प्रभावी है। इस शैली में पले-बढ़े बच्चे समाज-समर्थक व्यवहार दिखाते हैं और नैतिक समस्याओं के बारे में स्वायत्त रूप से तर्क करने में सक्षम होते हैं। इसके अलावा, वे वयस्कों का सम्मान करेंगे। इसके अलावा, वे अधिक आत्मनिर्भर, आत्म-नियंत्रित और आत्मविश्वासी होते हैं।

ये नतीजे उनके माता-पिता द्वारा उन्हें शिक्षित करने के तरीके से उत्पन्न होते हैं। आधिकारिक माता-पिता हमेशा अपने बच्चों की ज़रूरतों के प्रति जवाबदेही दिखाते हैं। इसके अलावा, वे अपने बच्चों के व्यवहार पर नज़र रखेंगे और तर्क के आधार पर अनुशासन बनाए रखेंगे। वे अपने बच्चों को भावनात्मक समर्थन दे सकते हैं लेकिन सख्त व्यवहारिक निगरानी के साथ। इसलिए, बच्चे वयस्कता में आपराधिक व्यवहार में कम शामिल पाए जाते हैं।

• अनुमोदक पालन-पोषण शैली

अनुमोदक पालन-पोषण शैली के दो प्रकार हैं, जो अनुमोदक कृपालु पालन-पोषण और अनुमोदक उपेक्षापूर्ण पालन-पोषण हैं। अनुमोदक कृपालु माता-पिता अपने बच्चों के प्रति उच्च स्तर की जवाबदेही दिखाते हैं, लेकिन मांग की कमी दिखाते हैं, जबकि अनुमोदक उपेक्षापूर्ण माता-पिता अपने बच्चों पर न्यूनतम गर्मजोशी और नियंत्रण रखते हैं।

अनुमेय कृपालु पालन-पोषण में, माता-पिता का अपने बच्चों पर बहुत कम नियंत्रण होता है। वे अपने बच्चों के साथ दोस्त की तरह व्यवहार करेंगे और इसलिए, उन्हें उनके बच्चे पसंद करेंगे और स्वीकार करेंगे। इसके अलावा, बच्चों को अनुमेय कृपालु माता-पिता द्वारा दिए गए किसी भी मार्गदर्शन के बिना अपने दम पर चीजों को तय करने की अनुमति है। इस प्रकार की पेरेंटिंग शैली अच्छी लगती है लेकिन वास्तव में, बच्चों का नैतिक विकास सीमित है। चूंकि बचपन में बच्चों पर माता-पिता का कम नियंत्रण होता है, इसलिए उन्हें नियमों का पालन करने में समस्याएँ आएंगी और दूसरों द्वारा पर्यवेक्षण का विरोध करना पड़ेगा। इसके अलावा, वे अपरिपक्व होते हैं और उनमें मनोवैज्ञानिक कुव्यवस्था का उच्च स्तर होता है। इसलिए, आधिकारिक पेरेंटिंग शैली के साथ बड़े होने वालों की तुलना में उनके असामाजिक व्यवहार में शामिल होने की संभावना अधिक होती है।

अनुमेय उपेक्षापूर्ण माता-पिता अपनी पालन-पोषण संबंधी जिम्मेदारियों को ठीक से नहीं निभाते हैं। वे बच्चों को सिर्फ शारीरिक ज़रूरतें ही प्रदान करेंगे, लेकिन चिंता और प्यार नहीं। वे बच्चों को बोझिल

और असुविधाजनक मान सकते हैं। इसके अलावा, बच्चों को ज़्यादातर समय अनदेखा या अस्वीकार किया जाता है। बच्चों को देखा जाता है, लेकिन उनके विचारों, समस्याओं या भावनाओं के बारे में नहीं सुना जाता। इसलिए, बच्चे अवसाद का अनुभव करेंगे और उनका व्यक्तित्व असामाजिक होगा। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि जिन बच्चों को अनुमेय उपेक्षापूर्ण शैली में पाला गया, वे हमेशा अश्वेतों के लिए उच्च आपराधिक प्रवृत्ति वाले होते हैं (जॉनसन, 2016)।

मेरे दृष्टिकोण से, मुझे लगता है कि अनुमेय उपेक्षापूर्ण पालन-पोषण शैली सबसे विनाशकारी है और बच्चों पर सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव डालती है। हालाँकि, सत्तावादी और अनुमेय कृपालु पालन-पोषण शैली में कमज़ोरियाँ हैं, फिर भी बच्चे अपने माता-पिता से प्यार और चिंताएँ महसूस कर सकते हैं। हालाँकि, जिन बच्चों को अनुमेय उपेक्षापूर्ण पालन-पोषण शैली के साथ पाला गया था, उन्हें माता-पिता द्वारा अनदेखा किया जाता है। मास्लो के ज़रूरतों के पदानुक्रम में, मनुष्यों में विकास के पाँच चरण होते हैं जो शारीरिक ज़रूरतें, सुरक्षा, प्यार या अपनापन, सम्मान और आत्म-साक्षात्कार (मैकलियोड, 2018) हैं। जिन बच्चों को अनुमेय उपेक्षापूर्ण शैली के साथ पाला गया था, वे शारीरिक ज़रूरतों के चरण तक पहुँच सकते हैं लेकिन निश्चित रूप से प्यार या अपनेपन के चरण तक नहीं पहुँच सकते। अगर प्यार या अपनेपन की भावना की कमी है, तो हम बच्चों से दूसरों के प्रति प्यार दिखाने और उच्च नैतिकता की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? इसका उत्तर निश्चित रूप से "नहीं" है! इसलिए, माता-पिता को अपने बच्चों के नैतिक विकास को विकसित करने के लिए उचित पालन-पोषण शैली अपनाने में सावधानी बरतनी चाहिए।

निष्कर्ष

माता-पिता एवं परिवार मानवोचित गुणों की प्राथमिक पाठशाला भी कहा जाता है क्योंकि परिवार से प्राप्त संस्कार ही बालक के सुदृढ़ चरित्र का निर्माण करते हैं और उसे सही दिशा निर्देश देकर एक सुयोग्य नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इस दृष्टि से परिवार को सामाजिक गुणों का पालना भी कहा जाता है, क्योंकि परिवार न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने में ही अपितु समाज के उत्थान में भी मूल्यवान योगदान देता है। सहयोग, सहानुभूति, सेवा, उत्सर्ग, नैतिकता ये सभी गुण हमारे सामाजिक जीवन के मुख्य आदर्श हैं जिनका शिक्षण बालक को परिवार से ही प्राप्त होता है। इस तथ्य को सत्यापित करने की दृष्टि से अब्राहम लिंकन का यह कथन उद्धृत करना न्यायसंगत होगा कि "मैं जो कुछ हूँ, या जो कुछ भी बनने की आशा रखता हूँ उसके लिए मैं अपनी देवी स्वरूपा माता का ऋणी हूँ। अतः स्पष्ट है कि माता-पिता एवं परिवार से प्रदत्त संस्कार ही आगे चलकर मानव

की सफलता का द्वार खोलते हैं और व्यक्ति को उसके संकुचित क्षेत्र से निकालकर व्यापक कर्म-भूमि पर उसे प्रतिष्ठित करते हैं।”

संदर्भ

1. हाजरा, स्नेहा और मित्तल, शालिनी। (2018)। नैतिक विकास में पेरेंटिंग की भूमिका: एक अवलोकन। 10.25215/0602.057।
2. मोलचानोव, सर्गेई. (2013). बचपन में नैतिक विकास. प्रोसीडिया - सामाजिक और व्यवहार विज्ञान. 86. 10.1016/j.sbspro.2013.08.623.
3. टैन, डब्ल्यू और यासीन, मैजुरा. (2020). बच्चों की नैतिकता को आकार देने में माता-पिता की भूमिकाएँ और पेरेंटिंग शैलियाँ. यूनिवर्सल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च. 8. 70-76. 10.13189/ujer.2020.081608.
4. रमैया, भावना और प्रोफेसर, असिस्टेंट (2024)। भारतीय बाल पालन प्रथाओं के संदर्भ में बच्चों के नैतिक विकास और अच्छी आदत निर्माण का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च। वॉल्यूम 6 जुलाई-अगस्त 2024। 10.36948/ijfmr.2024.v06i04.24920।
5. कोमलासारी, रातू और अतिका, कुकु और अस्मावती, लुलुक। (2022)। माता-पिता के सामाजिक-आर्थिक स्तर और प्रारंभिक बचपन के नैतिक विकास के साथ पालन-पोषण के बीच संबंध। अल-अथफाल: जर्नल पेंडिडिकन अनाक। 8. 39-48. 10.14421/अल-अथफाल.2022.81-04.
6. सरवर, एस. बच्चों के व्यवहार पर पेरेंटिंग शैली का प्रभाव। जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड एजुकेशनल डेवलपमेंट, 3(2), 222, 2016।
7. अंसारी, ए., और गेशॉफ, ई. हेडस्टार्ट और बच्चों के विकास में माता-पिता की भागीदारी: पेरेंटिंग के माध्यम से अप्रत्यक्ष प्रभाव। जर्नल ऑफ़ मैरिज एंड फैमिली, 78(2), 562-579, 2015
8. जॉनसन, एस.ए. (2016)। पेरेंटिंग स्टाइल और अपराधी बच्चों की परवरिश: हिंसक व्यवहार को बढ़ावा देने में माता-पिता की जिम्मेदारी। फोरेंसिक रिसर्च एंड क्रिमिनोलॉजी इंटरनेशनल जर्नल, 3(1), 81, 2016. doi:10.15406/frcuj.2016.03.00081
9. लैंगियर, सी. आधुनिक परिवारों के परिवर्तनों के संदर्भ में बच्चों की नैतिक परवरिश: मुद्दों का अवलोकन। ज़ेज़ीटीनाउकोवेविज़्ज़ेज़स्कोलीह्यूमैनिटास। पेडागोगिका, (12), 147-157, 2016।

10. जुबैदेह, बी., और अरसलान खान, एम.ओ. बाबोल शहर के किंडरगार्टन में 4-6 साल के बच्चों में नैतिक निर्णय के विकास के साथ पालन-पोषण शैलियों के बीच संबंधों की जांच करते हैं। मेडिटेरेनियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 2016. doi: 10.5901/mjss.2016.v7n2s2p92
11. अज़हर, और लाहमी, अहमद और रसीद, अगुसवान और रिटोंगा, मह्यूदीन और सपुतार, रिकी। (2020)। वैश्वीकरण के दौर में किशोरों की युवावस्था में नैतिकता के निर्माण में माता-पिता की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ फ्यूचर जेनरेशन कम्युनिकेशन एंड नेटवर्किंग। 13. 3991-3996।
12. मागरिता, लिडिया और हरियोनो, मिम्पिरा। (2024)। प्रारंभिक बचपन में नैतिक और धार्मिक मूल्यों का कार्यान्वयन। जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट एंड एजुकेशन। 1. 23-29. 10.58723/junior.v1i1.109।
13. मेडेज़, शेरोन रोज़ और गायोल्स, लिसा। (2021)। माता-पिता की नैतिकता और जेनरेशन Z किशोरों की नैतिकता: एक मिश्रित पद्धति अनुसंधान। टेक्नियम सोशल साइंसेज जर्नल। 19. 364-381. 10.47577/tssj.v19i1.3222।
14. यूलिया, हेनी. (2018). नैतिकता: आज की शिक्षा की आवश्यकता. एडुकासी लिंगुआ शास्त्र. 16. 47-57. 10.47637/elsa.v16i1.78.
15. हाफ़िज़ी, ज़ैनुल. (2023). बच्चों के चरित्र निर्माण में नैतिक शिक्षा का महत्व. IJGIE (इस्लामिक शिक्षा के स्नातकों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल). 4. 345-350. 10.37567/ijgie.v4i2.2527.